Tab 1

01 सूरए फातेहा

यहां हम सूरए फातेहा की सात आयतों का न्याय दर्शन, साथ ही अन्य छह दर्शनों के सिद्धांतों के आधार पर विश्लेषण करेंगे और यह साबित करेंगे कि ये आयतें तर्कसंगत दृष्टिकोण से गलत हैं। न्याय दर्शन के छह तत्वों का उपयोग करते हुए, हम इन आयतों को परीक्षा में डालेंगे।

आयत 1: "शुरू करता हूँ ख़ुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है"

तर्कसंगत विश्लेषण (न्याय दर्शन):

1. **पदार्थ (स्वरूप):**
   इस आयत में एक दिव्य अस्तित्व (ख़ुदा) का संदर्भ दिया गया है। न्याय दर्शन में, "पदार्थ" का मतलब वह जो हमारे अनुभव के आधार पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मौजूद हो। ख़ुदा का अस्तित्व न तो प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित है और न ही इसके बारे में कोई निर्णायक प्रमाण प्रस्तुत किया गया है। यह आयत किसी अमूर्त अस्तित्व का दावा करती है जो तर्कसंगत नहीं है।

2. **साक्षात्कार (ज्ञान):**
   अगर हम केवल अनुभव और प्रमाणों पर आधारित ज्ञान की बात करें, तो यह आयत ज्ञान के उस स्वरूप को नकारती है, जिसे हम जांच सकते हैं और प्रमाणित कर सकते हैं। इस आयत का दावा सत्य के अनुभव से परे है।

विरोधी सिद्धांत:
पुर्व मीमांसा और सांख्य योग में आत्मा और परम सत्य के अस्तित्व के बारे में विश्लेषण किया गया है, लेकिन ये सत्य केवल आंतरिक अनुभव पर आधारित हैं। अगर इस अस्तित्व को बाहरी दुनिया के सत्य के रूप में स्वीकार किया जाता है, तो यह उस अनुभव और प्रमाण से मेल नहीं खाता।

आयत 2: "सब तारीफ ख़ुदा ही के लिए सज़ावार है"

तर्कसंगत विश्लेषण (वैयशेषिक दर्शन):

1. **सद्भावना (सदाचार):**
   इस आयत में यह कहा गया है कि "तारीफ ख़ुदा के लिए है", लेकिन वैयशेषिक दर्शन के अनुसार,

किसी भी चीज़ का गुण या दोष केवल उसके स्वरूप पर निर्भर करता है। यहां ’ख़ुदा’ का गुणात्मक मूल्यांकन किया जा रहा है, लेकिन उसका आधार नहीं दिया गया। यदि सद्गुणों का आधार केवल अनुभव या प्रमाण पर आधारित नहीं है, तो यह आयत तर्कसंगत नहीं हो सकती।

2. **विशेषता (विषय):**
   इस आयत में केवल एक दिव्य शक्ति की विशेषता को बताया गया है, जो बिना किसी प्रमाण के है। वैयशेषिक दर्शन में पदार्थों के गुणों का परीक्षण अवश्य किया जाता है, और यहाँ दिव्य अस्तित्व की कोई विशेषता प्रस्तुत नहीं की गई है।

आयत 3: ”और सारे जहाँन का पालने वाला बड़ा मेहरबान रहम वाला है”

तर्कसंगत विश्लेषण (सांख्य दर्शन):

1. **कृष्णतत्त्व (प्रकृति का कार्य):**
   इस आयत में दुनिया के पालनकर्ता के बारे में कहा गया है, लेकिन सांख्य दर्शन के अनुसार, प्रकृति (प्रकृति के तत्व) और पुरुष (आत्मा) के बीच कोई एकात्मकता नहीं हो सकती है। यह आयत एकात्मवादी दृष्टिकोण को प्रकट करती है, जो सांख्य दर्शन के अनुसार गलत है क्योंकि हर अस्तित्व का कार्य स्वातंत्र्य पर आधारित है।

2. **न्यायशक्ति (कर्मफल):**
   इस आयत में एक सर्वशक्तिमान के विचार को स्वीकारा गया है, लेकिन सांख्य दर्शन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का परिणाम उसके स्वयं के पुरुष के अनुसार निर्धारित होता है, न कि किसी बाहरी शक्ति के द्वारा। इसलिए, इस आयत में व्यक्त विचार तर्कसंगत नहीं हो सकते।

आयत 4: ”रोज़े जज़ा का मालिक है”

तर्कसंगत विश्लेषण (न्याय दर्शन):

1. **कारण (कारण का सिद्धांत):**
   इस आयत में ”जज़ा का मालिक” कहा गया है, लेकिन न्याय दर्शन के अनुसार हर कार्य का परिणाम उसी के कारण से जुड़ा होता है, जो स्वयं उस कार्य के संपादन का कारण है। यहाँ ”मालिक” शब्द से

संकेत मिलता है कि यह अधिकार एक बाहरी सत्ता का है, जो न्याय के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता।

2. **कारण-कार्य (कारण का प्रत्यक्ष रूप से परीक्षण):**
   इस आयत में जो दावा किया गया है, वह अप्रत्यक्ष और अनुमानित है, जबकि न्याय दर्शन में "कारण-कार्य" को प्रत्यक्ष और प्रमाणित किया जाता है। बिना किसी प्रमाण के, यह आयत तर्कसंगत नहीं मानी जा सकती।

आयत 5: "ख़ुदाया हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं"

तर्कसंगत विश्लेषण (उत्तरा मीमांसा - वेदांत):

1. **आत्मा का स्वरूप:**
   इस आयत में ईश्वर से मदद की प्रार्थना की जा रही है, लेकिन वेदांत दर्शन के अनुसार आत्मा की पहचान ब्रह्म से है, और प्रत्येक आत्मा का परम सत्य के साथ एकात्मता है। यदि हम अपने कर्मों के परिणाम को केवल ईश्वर के हाथों में मानते हैं, तो यह आत्मा के स्वतंत्र कार्यों और निर्णयों के सिद्धांत के खिलाफ है।

2. **स्वतंत्रता:**
   वेदांत दर्शन में आत्मा का कार्य स्वतंत्रता से जुड़ा होता है, न कि किसी बाहरी शक्ति से। इस आयत में जो दावा किया गया है, वह आत्मा की स्वतंत्रता के सिद्धांत के खिलाफ है।

आयत 6: "तो हमको सीधी राह पर साबित क़दम रख"

तर्कसंगत विश्लेषण (मनुस्मृति):

1. **कर्मफल:**
   इस आयत में एक स्थिर मार्ग को प्राप्त करने की बात की जा रही है, लेकिन मनुस्मृति के अनुसार, हर व्यक्ति का मार्ग उसके कर्मों और निर्णयों पर निर्भर करता है। यदि किसी को "सीधी राह" पर चलने के लिए कहा जाता है, तो यह उसकी अपनी इच्छाओं और कर्मों से जुड़ा होता है, न कि किसी बाहरी निर्देश से।

2. **स्वतंत्रता का उल्लंघन:**
    यह आयत व्यक्ति के स्वतंत्र निर्णय और मार्ग पर चलने के अधिकार का उल्लंघन करती है, जो मनुस्मृति के अनुसार तर्कसंगत नहीं है।

आयत 7: "उनकी राह जिन्हें तूने (अपनी) नेअमत अता की है न उनकी राह जिन पर तेरा ग़ज़ब ढ़ाया गया और न गुमराहों की"

तर्कसंगत विश्लेषण (न्याय दर्शन और पुर्व मीमांसा):

1. **स्वतंत्र निर्णय:**
    इस आयत में यह कहा गया है कि कुछ लोगों को नेमत दी गई है और कुछ को ग़ज़ब में डाला गया है, लेकिन न्याय दर्शन और पुर्व मीमांसा के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का परिणाम और कार्य स्वयं तय करना होता है। यह आयत कर्मफल के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, जिसमें व्यक्ति को अपने कर्मों के परिणामों का अधिकार होता है।

2. **व्यक्तिगत उत्तरदायित्व:**
    इस आयत में "नेमत" और "ग़ज़ब" का बाहरी निर्धारण किया गया है, जबकि पुर्व मीमांसा और न्याय दर्शन में व्यक्ति की स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व को प्राथमिकता दी जाती है।

निष्कर्ष:
 सूरए फातेहा की आयतों का विश्लेषण न्याय दर्शन, सांख्य योग, वैयशेषिक दर्शन, पुर्व मीमांसा, वेदांत, और मनुस्मृति के सिद्धांतों के आधार पर किया गया। इन आयतों के कई तत्व तर्कसंगत दृष्टिकोण से गलत साबित होते हैं, क्योंकि वे बाहरी शक्तियों, आदेशों और दिव्य विचारों को प्रमाणित करने के बिना प्रस्तुत करते हैं।